

पद १४०

(रागः यमन जिल्हा - तालः त्रिताल)

जग रूठा तो रूठन दे । एक तुम मत रूठो मेरे रामजी ॥ध्रु.॥ एक
चंद्र का प्रकाश भये तब । उडुगण से मोहे क्या काम जी ॥१॥
कल्पवृक्ष ने छत्रधरे तब । और वृक्ष की क्या छांव जी ॥२॥ कामधेनु
ने दुग्ध पिलाया । और बसत धेनु धाम जी ॥३॥ मानिक कहे
सागरमो न्हाये । तब तीरथ का क्या काम जी ॥४॥